भजन

तर्ज :– आपसे हमको बिछड़े हुये

इक माला के मोती थे हम, आके जहाँ में बिखर गये
इक गुलशन में खिलने वाले, फूल खिजाँ में बिखर गये

1.) इस चरकीन की थाह ना कोई, जिसमें मोती खोये हैं
सतगुरू ने इक–इक को चुनकर, प्रेम के हार पिरोये हैं
सतगुरू चरण का सहारा मिला, जलवे रूह की नजर हुये
इक माला के मोती..

2) सतगुरू रूप में धाम धनी ने, वतन की राह बताई है
हम है धनी के वो हैं हमारे, मिलन की तड़प जगाई है
विरहा में जल–जल करके पिया, आपके आशिक निखर गये
इक माला के मोती..

3.) मिलन के इक पल पर न्यौछावर, साहेबी चौदह आलम की
पांव पलक में आतम पहुँचे, चरणों में अपने खावन्द की
इश्क ईमां की जो सीढ़ी चढ़े, अक्षर पार वो उतर गये
इक माला के मोती..